आज का पुरुषार्थ 29 June 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज से अपने में दिव्य गुणों और श्रेष्ठ दिव्य चरित्र की सुंदरता को धारण करे "*

संगमयुग पर जब दोनों बाप मिलते है, **निराकार साकार** में आते है, तब वे हमारा **श्रृंगार** करते है। श्रृंगार करते है पवित्रता से। हमारा श्रृंगार होता है, दिव्य गुणों स, शक्तियों से, उनके वरदानों से।

हमें वो बहुत **खुबसूरत** बना देते है। आत्मा खुबसूरत होती है, **मन सुन्दर** होता है तो तन भी **सुन्दर** रहता है। कंचन काया रहती है। चेहरे पर **नेचुरल** ब्यूटी रहती है।

कोई व्यक्ति बाहर से जीतना भी सुन्दर हो, लेकिन अंदर में क्रोधी हो, उसमें सदगुणों का अभाव हो, तो उनकी सुन्दरता किसी को भी प्रिय नहीं लगती।

लेकिन वो व्यक्ति जो कम सुन्दर है, लेकिन बहुत **गुणवान** है, बहुत **चरित्रवान** है, उनकी यह वास्तविक सुन्दरता होती है। और यह सुन्दरता सबको अपनी ओर आकर्षित करता है।

तो हम ध्यान दे। हमारे पास **नम्रता** का बहुत सुन्दर गुण हो। हम मधुर भाषी हो, **निरहंकारी** हो। यह तीन चीज़ होने से हम बहुत सजे सजाये रहते है।

हमारे अंदर **क्रोध** न हो। **चिड़चिड़ापन** न हो। और **अभिमान** न हो।
यह तीन बुराई छोड़ने से हमारा श्रृंगार सदा चमकता रहता है। यूँ तो गुणों और वरदानों से भी हम अपना श्रृंगार करते है।

बाबा से कोई एक वरदान हम ले ले अपने पूरे जीवन के लिए। यह वरदान **संगमयुग** पर हमारे साथ चलेगा। भविष्य में हम दुसरों की इस वरदान से सेवा कर सकेंगे।

और द्वापर युग के बाद हमारा वही वरदान हमारी मूर्तियों के द्वारा सेवा करायेगा। मान लो हमने वरदान ले लिया ...

" मैं विघ्न विनाशक हूँ "

तो आने वाले समय में हम दुसरों के विघ्न को नष्ट करने के निमित्त बन जायेंगे। और भक्ति में हमारे मूर्तियों के द्वारा सबके विघ्न नष्ट हुआ करेंगे।

जो जीतना **खुश** रहता है समझ ले वही **श्रृंगारा** हुआ है। और जो जीतना दुःखी है, निराश है, परेशान है समझ ले उसने अपना श्रृंगार बिगार दिया है।

हम भगवान के बच्चे है। और भगवान स्वयं हमारा श्रृंगार करने आता है। तो हमें स्वयं को उनके आगे समर्पित कर देना चाहिए। तभी तो वो हमारा अच्छे ते अच्छा श्रृंगार कर पायेगा।

समर्पणता का अर्थ है ...

अपने मैं पन का समर्पण , अपने बुद्धि के अभिमान का समर्पण।

जब हम यह दोनों चीजों को अर्पित करके बाबा के सम्मुख जाते है तो बाबा हमें **शक्तियों** से भरने लगते है। वो हमारा **सद्गुणों से श्रृंगार** करने लगते है। वो हमारे चित्त में पवित्र भाव भरने लगते है।

तो आइये, हम अपना श्रृंगार किया करे। और एक वरदान आज के दिन ले ले बाबा से। वह वरदान है ... **" विजयी भव "**

तो आज प्रति घन्टा एकबार मेहसूस करेंगे ...

" हम सूक्ष्म लोक में बाबा के सामने है .. और बाबा ने हमारे मस्तक में तिलक लगाकर यह वरदान दिया ...

' बच्चे, विजयी भव । मायाजीत भव । क्रोधमुक्त भव । "

बस उसे स्वीकार कर ले .. यह हमारे विजय है .. क्रोध पर .. माया पर "

हर घन्टे यह अभ्यास करेंगे और **सूक्ष्म लोक** में जाकर बाबा से दृष्टि भी लेंगे। ताकि दृष्टि से उन वरदानों में शक्ति भर जाये।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org